माँ नर्मदा माहात्म्य एवं अमरकण्टक दर्शन

प्रस्तुतिः- **डॉ भागीरथी गौरहा** सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य (राष्ट्रपति पुरस्कृत)

परम पावनी नर्मदा

भारतवर्ष, भूमण्डल का सर्वोत्तम शक्तिशाली महिमामण्डित आध्यात्मिक-केन्द्र बिन्दु है, जो गगन मण्डल में सर्वसाक्षी-स्वरूप भगवान् श्री सूर्यनारायण की भाँति अपनी कृपामयी ज्योति की किरण माला से समस्त ग्रह मण्डल नक्षत्रमण्डल और अखिल ब्रह्माण्ड को युगों से आलोकित करते रहने का वैभवशाली गौरव से भुवन-कोष-मण्डल में सर्वमान्यता प्राप्त अग्रणी है। सृष्टि के प्रारम्भ से ही आध्यात्म ज्ञान की संस्कृति, अपेक्षाकृत नगरीय क्षेत्रों अथवा बसाहट के, वनाँचल के सुरम्य, दुर्गम, निर्जन अरण्यों में जल श्रोत समीप युग-दृष्टा सिद्ध साधु सन्तों तपस्वी ऋषि मुनियों महात्माओं के अनुभवशील यौगिक-तप तथा अलौकिक ज्ञान-क्षमता से बीजाङ्कुरित हो पल्लवित, पुष्पित और पल्लवित हुई है। इन्होंने अपनी कठिन त्याग तपस्या जन कल्याण की अनूठी भावना, सेवा और पवित्र साधना के माध्यम से काष्ठ में सन्निहित अग्नि-ज्वाला को प्राकट्य करने में "**अरणि-मन्थन-प्रयोग**" परिश्रम के समान अन्धकार से प्रकाश की ज्योतिर्मय दिव्य-किरण का आविष्कार किया है।

ऐसी ही वनाच्छादित गिरि गह्वर के उत्तुंग मेखला-शृंगों-मध्य संस्कृति जननी परम पावनी मातु नर्मदे के आविर्वभूत का पुण्य क्षेत्र विशाल विन्ध्यगिरि मेखला है, पुराण में उल्लेख मिलता हैः-

आसीत विन्ध्याचलो नाम मान्यः सर्वधराभृताम् ।
महावन समूहाढ्यो महापादपसंवृतः ।।
सुपुष्पितैरनेकैश्च लतागुल्मैस्तु संवृत्तः ।
मृगा वराहा महिषा व्याघ्राः शार्दूलका अपि ।।
वानराः शशका ऋक्षाः शृगालाश्च समंततः ।
विचरन्ति सदा हृष्टा पुष्टा एव महोद्यमाः ।।
नदीनदजलाक्रान्तो देव गंधर्व किन्नरैः ।
अप्सरोभिः किं पुरुषैः सर्वकामफल द्रुमैः ।।

भावार्थ है कि पर्वतों में श्रेष्ठ विन्ध्याचल नाम का पर्वत था। उस पर बड़े-बड़े वन थे। अनेक वृक्षों से वह घिरा था। पुष्पों से लदी हुई लताओं और बल्लरियों ने उसे आच्छादित कर रखा था। मृग, वाराह, महिष, व्याघ्र, शार्दूल, वानर, खरगोश, भालू और शृगाल- ये अत्यन्त हृष्ट-पुष्ट एवम् अत्यन्त चञ्चल वन पशु उस पर्वत पर चारों ओर घूमते रहते थे। नदियों और नदों के जल से वह व्याप्त था। देवता, गन्धर्व, किन्नर ऋषि-मुनि, अप्सरा तथा मनोऽभिलषित फल देने वाले वृक्ष उस विंध्यगिरि को सुशोभित कर रहे थे। *(देवीभागवत १०।२।१०-१३)*

इस तरह यही नदी नद और जल प्रपात परिपूरित परम पावनी पुण्य सलिला नर्मदा वर्तमान परिप्रेक्ष्य में आमकूट पवित्रक्षेत्र अमरकण्टक में सर्वत्र परिव्याप्त है और सतयुग द्वापर त्रेता युगीन सभ्यता संस्कृति तथा आध्यात्मिक विद्या की प्रेरणा-श्रोत का प्रतिपादन करती हुई अद्यतन प्रतिष्ठित है। मातु नर्मदे की महान् महिमा ने अमरकण्टक क्षेत्र को तीर्थ राज की प्रतिष्ठा से अलङ्कृत किया है इनके आदि से सङ्गम और तटवर्ती क्षेत्र तक ६०,६०,००० तीर्थ स्थानों का उल्लेख स्कन्द पुराण रेवाखण्ड और मत्स्य पुराण में मिलता है; "**षष्टिस्तीर्थ सहस्राणि षष्टि कोट्यस्थैव च, सर्वम् तस्य समंतात् तु तिष्ठत्य-मरकन्टके।**" मत्स्यपुराण १८६।श्लोक-२४-२५। जिनमें नर्मदा के आदि उद्गम स्थली अमरकण्टक क्षेत्र में भगवान् के २४ अवतार की भाँति सुन्दर २४ मन्दिर हैं जिससे लगता है यह मन्दिर धाम ही है। योगीराज श्री कृष्ण जी ने पाण्डव नन्दन अर्जुन को समराङ्गण में कर्तव्य की शिक्षा देते हुए श्री मद्भगवद्गीता में उपदेश दिया है- **यज्ञो दान तपः कर्म न त्याज्यं कार्यमेव तत्।यज्ञो दान तपश्चैव पावनानि तपस्विनाम्।**

भावार्थ- हे अर्जुन यज्ञ दान और तपादिक कर्म का त्याग कदापि न करें किन्तु इनको अवश्य करें। यज्ञ दान और तप विवेकी पुरुषों के चित्त को शुद्ध करने वाले हैं। *(भगवत्गीता१८।५)*। पुण्य प्रदायिनी नर्मदाञ्चल और तराईयाँ प्राचीनकाल से ही यज्ञ-तप-दान-सेवा साधना की मनोरम तपस्थली है; जिन्होंने सतयुग, त्रेता, द्वापर युग में तपस्या कर पुण्य अर्जित किये उनमें से कुछेक देवी देवताओं, ऋषि-मुनियों का शास्त्र प्रमाणित विवरण नीचे तालिका में प्रदर्शित है-

क्रम	देवगण	स्थान	संक्षिप्त उपासना विवरण
१	भगवान् श्रीब्रह्माजी	ब्रह्मतीर्थ जीगोर कोरल-सावित्रीतीर्थ	वर्षो तप किया, यज्ञ ब्रह्मेश्वर महादेव स्थापना यज्ञ किया, ब्रह्माजी का विवाह सावित्री के साथ
२	भगवान् श्रीविष्णु	गंगनाथतीर्थ, कोटेश्वरतीर्थ	नर-नारायण रूप में तपस्या की, विष्णु भगवान् ने तपस्या की, तपस्या मत्स्यावतार में तप,
३	भगवान् श्रीशंकर	गोनागोनीतीर्थ भड़ोच, नीलकंठ चतुर्भुज शिव-मंदिर, भरोड़ी	शंकर भगवान् का व्याह गौरा मैया के साथ हुआ था। भगवान् शंकर ने तप किया।
४	श्री कपिल मुनि	शूलपाणि गणेश्वर तीर्थ रामपुरा	तपस्या कर सिद्धि पाई, चित्रसेन गन्धर्व को भी सिद्धि मिली कपिल तप से शान्ति पाये
५	मुनि मार्कण्डेय	जीगोर कुम्भेश्वर महादेव, मार्कण्डेय तीर्थ	तप, कलश में शिव आराधना, शिव प्रगट हुए स्थापना, तप,
६	ब्रह्मर्षि वसिष्ठ	राजघाट सहस्रतीर्थ	तप, सप्तर्षि पद एवं सिद्धि
७	विश्वामित्र अगस्त्य	राजघाट सहस्रतीर्थ, अकतेश्वर तीर्थ	तप, सप्तर्षि बने एवं सिद्धि पाये, विंध्याचल वृद्धि रोका, अगत्येश्वर मंदिर निर्माण
८	गौतमऋषि भारद्वाजऋषि	शङ्खोद्धार तीर्थ राजघाट सहस्र तीर्थ	गौतम ऋषि ने तप करके गौतमेश्वर शिव स्थापित तप एवं सिद्धि, सप्तर्षि
९	कश्यप ऋषि	मार्गलेश्वर महादेव (झीनोर क्षेत्र) गौतमेश्वर	कश्यपगोत्री ऋषियों ने तप कर तपस्या, राजघाट में तप, सिद्धि-सप्तर्षि
१०	बाल्यखिल्यादि	वालखिल्येश्वर तीर्थ	तप, एवम् सिद्धि
११	सनकादि	सिद्धनाथ मंदिर	मंदिर स्थापना की
१२	भृगु ऋषि	कोरल क्षेत्र, भृगीश्वरतीर्थ अङ्कलेश्वरतीर्थ, भृगेश्वर तीर्थ, भास्कर तीर्थ	स्नान, तप, भड़ोच में आश्रम व निवास, तप प्रभाव से नर्मदा को आश्रम में ले आये भृगु जी ने सूर्य भगवान् का तप किया।
१३	इन्द्र मनु	कोरल क्षेत्र, मोक्ष तीर्थ	इन्द्र तपकर श्रापमुक्त हुए मालसर में तप से ब्रह्म हत्या मुक्त हुए थे।
१४	पक्षिराज गरुड़	नागेश्वर तीर्थ, तिलकबाड़ा	तप एवं सिद्धि
१५	राजा बलि	सोमनाथ महादेव, भड़ौच	राजा बलि ने १०बार अश्वमेध यज्ञ किया।
१६	देवमाताअदिति	ऋद्धेश्वरतीर्थ	तप किया था।
१७	राजा सहस्रबाहु	सहस्रधारा, मण्डला	हजार भुजाओं से नर्मदा धारा रोकना, तपस्या करना।
१८	रावण, कुम्भकर्ण, मेघनाथ	अनङ्गेश्वर शिव मन्दिर	स्थापना और तपस्या गोपनदी सङ्गम पर मन्दिर
१९	ऋषि जाबालि	गौर नदी सङ्गम	जाबालि ऋषि ने तप किया (जबलपुर हुआ)
२०	महात्मा कबीर	शुक्ल तीर्थ	महात्मा कबीर यहाँ निवास किये थे। कबीरजी दातौन से एक विशाल-वट वृक्ष पैदा हुआ।
२१	महर्षि यमदग्नि	सिद्धनाथेश्वर	तप किया।
२२	महर्षि बाल्मीकि	सीता वाटिका तीर्थ	वनवास में सीता निवास, महर्षि ने तपस्या की।
२३	कुबेर जी	कुबेर भण्डारी, ओंकेश्वर तीर्थ कोषाधिकार	कावेरी सङ्गम पर तपस्या की, पुष्पक विमान और अलकापुरी प्राप्त किये।
२४	मातङ्ग	विमलेश्वर महादेव	मतङ्ग ऋषि आश्रम, सेवा साधना, तपस्या।
२५	दारुक एवं चित्रसेन गन्धर्व के पुत्र	ब्राह्मणपुर, माण्डवगढ़	वानप्रस्थी आश्रम, तपस्या
२६	भगवान् वाराह	बड़ा वरदा सौर तीर्थ, शुक्लेश्वर	पृथ्वी उद्धार हित तपस्या की।
२७	नन्दीगण	अग्नि तीर्थ	तपस्या की, नन्दीकेश्वर शिव स्थापना
२८	हिरण्याक्ष	हिरनफाल धर्मराज तीर्थ	तप से सिद्धि पाया।
२९	धर्मराज युधिष्ठिर	धर्मराज तीर्थ (वाण गङ्गा सङ्गम)	यज्ञ किया, धर्मेश्वर की स्थापना।
३०	पिप्पलाद ऋषि	शूलपाणि तीर्थ	तपस्या

३१	महर्षि वेद व्यास	शूलपाणि तीर्थ	तपस्या, सिद्धि, व्यास तीर्थ में धारा ही समीप ले आये।
३२	अश्विनी कुमार	शूलपाणि तीर्थ,वैद्यनाथ तीर्थ	तपस्या, वैद्य विद्या सिद्धि, रोग निवारण सिद्धि
३३	शांडिल्य ऋषि	अकतेश्वर तीर्थ	केदारनाथ का यहीं दर्शन पाये। मूर्ति स्वयं प्रगट हुआ।
३४	भस्मासुर	रामपुरा	शिवाराधन एवं वरदान
३५	जाम्बवान्, सुषेण नल, नील, नन्दी चन्द्रमा, अग्नि भगवान् वामन	महादेव (पूतकेश्वर,नंदीकेश्वर सोमेश्वर मन्दिर)	तपस्या एवं सिद्धि
३६	भक्तराज हनुमान्	हनुमन्तेश्वर महादेव	तपस्या, आराधना, रावण-पुत्रों की ब्रह्म हत्या का प्रायश्चित्त विधान किया,
३७	भगवान्-बलराम	व्यास तीर्थ	बिल्व वट नीचे तपस्या
३८	अनसूईया, अत्रि	ओकेश्वर तीर्थ	तप, दत्तात्रेय को पुत्र रूप में पाये।
३९	महर्षि परशुराम कार्तिकेय, चन्द्र पत्नी रोहिणी आङ्गिरस	रोहिणेश्वर तीर्थ	तप, स्थापना सिद्धि पाई।
४०	वरुण	झीनोर वारमणेश्वर	तप और पुष्कट नामक पुत्र प्राप्त
४१	राजा प्रियव्रत	गौतमेश्वर तीर्थ	१० अश्वमेध यज्ञ किया।
४२	मङ्गल	अङ्गारेश्वर	स्थापना कर तप किया, नवग्रह मण्डल में स्थान पाया।
४३	कामदेव	कुसुमेश्वर	तप कर सिद्धि पाई।
४४	भगवान् श्रीराम	जीगोर	रामेश्वर मन्दिर की स्थापना अति प्राचीन मन्दिर।
४५	श्रीसुग्रीव, तिलकवाड़ा	वातरेश्वर महादेव	सुग्रीव ने तप करके शिव-स्थापना की।

केवल स्नान कर लेने से मुक्ति दायिनी नर्मदा तीर्थ, अमरकण्टक अति प्राचीन तथा देवताओं द्वारा स्थापित है। यथा-

अमरकण्टकं गच्छेदमरैः स्थापितम् पुरा।
स्नान मात्रो नरस्तत्र रुद्रलोके महीयते।।

(मत्स्यपुराण १९१।२५)

पतित पावनी पाप नाशिनी नर्मदा तटवर्ती तीर्थों की संख्या कोटि अङ्को में हैं फिर भी नाम स्मरण कर पुण्य लाभ के उद्देश्य से कुछ नामावली इस प्रकार है:-

नार्मदे चोत्तरे कूले तीर्थम् योजनविस्तृतम्।
यन्त्रेश्वरेति विख्यातम् सर्व पाप हरं परम्।। *१९०।१।म.पु.*

तीर्थ	तीर्थ	तीर्थ	तीर्थ
यन्त्रेश्वर	गर्जनेश्वर	आम्रातकेश्वर	धारा
ब्रह्मावर्त	अङ्गारेश्वर	कपिला	करञ्ज
कुण्डलेश्वर	पिप्लेश्वर	विमलेश्वर	पुष्करिणी
शूलभेदेश्वर	नारदेश्वर	आदित्येश्वर	नन्दिकेश्वर
वरुणेश्वर	स्वतन्त्रेश्वर	कोटीश्वर	बहुनेत्रेश्वर
अगत्स्येश्वर	बलाकेश्वर	इन्द्रेश्वर	ऋषेश्वर
देवतीर्थ	अमरकण्टकेश्वर	रावणेश्वर	ऋणतीर्थेश्वर
वटेश्वर	भीमेश्वर	तुरासङ्गेश्वर	सोमेश्वर
पिङ्गलेश्वर	कर्कोटकेश्वर	नन्दितीर्थेश्वर	दीपेश्वरेश्वर
एरण्डी सङ्गम	ईक्षुनदी सङ्गम	स्कन्देश्वर	लिङ्गसारेश्वर
भङ्गतीर्थेश्वर	वटेश्वर	सङ्गमेश	कोटि
अङ्गारेश्वर	अयोनिसम्भव	पाण्डवेश्वर	कठेश्वर
चन्द्रभागा	ब्रह्मावर्त	कपिला तीर्थ	नर्मदेश्वर सङ्गम
सङ्गमेश्वर	आदित्या यतन	गर्गेश्वर	कालेश्वर
मारुतालय	यवतीर्थ	अहिल्या	रामेश्वर
सोम तीर्थ	विष्णुतीर्थ	तापसेश्वर	सिद्धेश्वर
कुसुमेश्वर	त्र्यम्बकेश्वर	अनरक	गङ्गेश्वर

भृगु	कनरवल	हंस तीर्थ	कन्यातीर्थ
शिखितीर्थ	अङ्कुशेश्वर	अश्वतीर्थ	सावित्री तीर्थ
कुब्ज तीर्थ	त्रिदश ज्योति	ऋषि कन्या	स्वर्ण विन्दु
असुरेश	भारभूति	घृतपूर्ण	कौशिकी तीर्थ

अमरकण्टक से लेकर नर्मदा सङ्गम के तटवर्ती मध्य में १० करोड़ तीर्थ और करोड़ों ऋषिगण निवास करते हैं; शेष तीर्थ नर्मदा तीर्थ क्षेत्र एवम् सङ्गम क्षेत्रों में फैले हुए हैं। यह नर्मदा मातु और तटीय-क्षेत्र देव ऋषि मुनि सभी ध्यानपरायण त्यागी तपस्वी विद्वान् सन्तों द्वारा सेवित है। यह तीर्थ-परम्परा का अभीष्ट फल प्रदान करने वाली है; श्रद्धापूर्वक इन तीर्थों का नाम स्मरण पाठ करने वालों को, श्रवण करने वालों को उत्तम फल प्राप्त होता है, मातु नर्मदा सदा प्रसन्न होती है, महामुनि मार्कण्डेय तथा भगवान् रुद्र प्रसन्न होते हैं। यथा-

नर्मदा च सदा प्रीता भवेद् वै नात्र संशयः।
प्रीतस्तस्य भवेद रुद्रो-मार्कण्डेयो महामुनिः।। १९५/४८ म.पु.

नर्मदा जल की महिमा यह है कि जो नर्मदा जल पीकर भगवान् श्री शिवजी की पूजा करते हैं, उन्हें उस तीर्थ के प्रभाव से दुर्गति नहीं देखनी पड़ती, यदि प्राणान्त हो जाता है तो समस्त पापों से मुक्त होकर शिवधाम को प्राप्त करता है यथा-

नर्मदाया जलम् पीत्वा ह्यर्चयन्ति वृषध्वजम्।
दुर्गतिं च न पश्यन्ति तस्य तीर्थ प्रभावतः।। १९४/२५,२६
एतत् तीर्थम् समासाद्य यस्तु प्राणान् विमुञ्चति।
सर्व पाप विनिर्मुक्तो व्रजेद् वै यत्र शंकरः।।२६।।

मातु नर्मदि, मन की सभी कामनाओं को पूरा कर देती हैं

यथा- **यान् यान् कामयते कामान् पशु पुत्र धनानि च।**
प्राप्नुयात् तानि सर्वाणि तत्र स्नात्वा नराधिप।।१०।।

पाप विमोचनी नर्मदा में स्नान करने से समस्त पातकों का नाश और ब्रह्महत्या दोष से मानव विमुक्त हो जाता है।

भगवान् श्रीराम ने रावण वध तथा श्री हनुमानजी ने रावण पुत्रों के वध उपरान्त नर्मदा स्नान किया था-

यथा- **नर्मदायाम् कृतम् राजन् सर्व पातक नाशनम्।**
तत्र तीर्थे नरः स्नात्वा ब्रह्महत्याम् विमुञ्चति।। १९३/१५

परम पावनी नर्मदा शम्भु (शिव) शरीर से प्रगट हुई है और चराचर जगत का उद्धार करती है, वह नदियों में श्रेष्ठ है यथा-

नर्मदा सरिताश्रेष्ठा रुद्रदेहाद् विनिःसृता।
तारयेत् सर्व भूतानि स्थावराणि चराणि च।। १९०/१७

नर्मदा सङ्गम में स्नान से गङ्गा यमुना स्नान बराबर पुण्य होता है पाप मुक्त हो, शिवार्चन कर अश्वमेध यज्ञ का फल एवं, शिवलोक प्राप्ति होती है।

यथा- **गङ्गायमुनयोर्मध्ये यत्फलं प्राप्नुयान्नरः**
कावेरी सङ्गमे स्नात्वा तत्फलं तस्य जायते।। १८६/२७
तत्र स्नात्वा तु राजेन्द्र ह्यर्वदेव वृषध्वजम्
अश्वमेध फलं प्राप्य रुद्रलोक महीयते।।१४।।

भगवान् शिव शंकर को पावनी नर्मदा अत्यन्त प्रिय है, तपस्या में लीन नर्मदा भगवान् शिव के शरीर से श्रम-बिन्दु रूप में उद्‌भूत है, ऋषि मुनि देव वन्दनीया है; असंख्य यज्ञों के पुण्य वैभव सम्पन्नता का गौरव उन्हें प्राप्त है तदनुरूप यह जनश्रुति कहावत सर्वत्र सुनी जाती है।

हर हर नर्मदे

नर्मदा का कङ्कर-वे ही शिव शंकर।

कहीं कहीं यह भी प्रचलित है कि नर्मदा से प्राप्त नर्मदेश्वर की शिवमूर्ति को **"प्राण-प्रतिष्ठा"** करने की आवश्यकता नहीं होती।

त्रिलोकी में विख्यात, रमणीय, मनोरम एवं पुण्यदायिनी नर्मदा अमरकण्टक पर्वत से प्रवाहित होती है। इसके तट पर देवता असुर गन्धर्व और तपस्या में रत ऋषि गणों ने तपस्या कर परम सिद्धि को प्राप्त किया है अतः सम्पूर्ण नर्मदा क्षेत्र सिद्धि धाम; सिद्धपीठ सर्वतीर्थ-कल्पतरु है। महात्माओं, साधु सन्तों और तपस्वियों ने अमर कण्टक को परिभाषित किया है कि एक ओर भक्तिमार्गी दिव्य साधना वाले यहाँ

अमरत्त्व प्राप्त करते हैं तो दूसरी ओर विषय वासनाओं के कठपुतली बने लोगों के लिए यह कण्टकाकीर्ण क्षेत्र है; फिर भी उनकी कामना की पूर्ति माँ नर्मदा कर देती है।

माई नर्मदा की महत्त्वपूर्ण महिमा यह भी है कि अखिल विश्व में सर्वश्रेष्ठ मान्यता वाली नदियों में सर्वोपरि है; तीर्थ यात्रियों द्वारा परिक्रमा की जाने वाली नदियों में यह विशेष महत्ता प्राप्त दिव्य नदी है। आजन्म कुँआरी उद्गम से सीधे सागर सङ्गम, मध्य में अनेकों नदियों के सङ्गम जो पवित्रता को संजोये रख कर पुण्य में वृद्धि कर तीर्थयात्रियों को आकर्षित करते रहते हैं।

पुण्यसलिला नर्मदा माई का जो माहात्म्य पुराणों में आया है उससे विदित होता है कि कनखल में गङ्गा नदी, और कुरुक्षेत्र में सरस्वती नदी पुण्य प्रदा कही गयी है किन्तु चाहे गाँव हो, पहाड़ हो या वन हो नर्मदा तो अमरकण्टक से सागर सङ्गम तक सभी जगह पुण्य प्रदायिनी है।

यथा- **पुण्या कनखले गङ्गा कुरुक्षेत्रे सरस्वती।**
ग्रामे वा यदि वारण्ये पुण्या सर्वत्र नर्मदा।। *१८६/१०*

अन्य नदियों में बार बार स्नान करना पड़ता है। सरस्वती का जल ३ दिनों तक, यमुना का जल ७ दिनों तक और गङ्गा का जल स्नान पानादि उसी समय पवित्र कर देता है परन्तु नर्मदा का जल तो दर्शन मात्र से ही पवित्र कर देता है-

यथा- **त्रिभिः सारस्वतं तोयम् सप्ताहेन तु यामुनम्।**
सद्यः पुनाति गाङ्गेयं - दर्शनादेव नार्मदम्।।११।।

नर्मदा जी का जल यज्ञ देवार्चनाओं में प्रयुक्त होता है और प्रधान नदियों की श्रेणी में अभिहित है-

यथा- **गङ्गा च यमुना चैव गोदावरी सरस्वती।**
नर्मदा सिन्धु कावेरी स्नानार्थम् प्रतिगृह्यताम्।।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि मातु नर्मदे की महान् महिमा है, जिसे वर्णन नहीं किया जा सकता। मातु नर्मदे सद्यः मुक्ति प्रदाता हैं।

नर्मदा लहरी के रचयिता कविवर रवि राज ने दिग्दर्शन किया है-

व्यास वाल्मीकि वामदेव त्यौं वसिष्ठ वर,
अंगिरा अगस्त सनकादि नारदादि सब
आये रेवा मंज कौं मंजै मुनिजन सब
एक देवरिषि दूर ठाढ़ै कहै कर जोरि जब।
कहै "रविराज" पूछ्यो द्विजन-समज ऐसो
तुम क्यो न कीनो स्नान बोलै मुनिराज जब
देखन के मात्र मैया मुगती महान देती
मंजन ते कहाँ देती ताकौं नहि जानो अब।।

इस तरह माँ नर्मदे की महिमा अपार है, नर्मदा मैया की जय।
हर हर महादेव, हर हर नर्मदे। *पाण्डवपारा १-१०-२००२*

नर्मदाष्टकम् (१)

सबिन्दु-सिन्धु-सुस्खलत्तरङ्ग-भङ्गरञ्जितं, द्विषत्सु पाप-जातजातकारि-वारिसंयुतम्।
कृतान्तदूत - कालभूत - भीतिहारिवर्मदे, त्वदीयपादपङ्कजं नमामि देवि नर्मदे।।१।।
त्वदम्बुलीन-दीन-मीन-दिव्य-सम्प्रदायकं, कलौ मलौघभारहारि सर्वतीर्थनायकम्।
सुमच्छ - कच्छ - नक्र - चक्रचक्रवाकशर्मदे, त्वदीयपादपङ्कजं नमामि देवि नर्मदे।।२।।
महागभीर - नीरपूर - पापधूत - भूतलं, ध्वनत्समस्त-पातकारि - दारितापदाचलम्।
जगल्लये महाभये मृकण्डसूनु - हर्म्यदे, त्वदीयपादपङ्कजं नमामि देवि नर्मदे।।३।।
गतं तदैव मे भयं त्वदम्बु वीक्षितं यदा, मृकण्डसूनु - शौनकासुरारिसेवि सर्वदा।
पुनर्भवाब्धिजन्मजं भवाब्धिदुःख वर्मदे, त्वदीयपादपङ्कजं नमामि देवि नर्मदे।।४।।
अलक्ष-लक्ष-किन्नरामरासुरादि -पूजितं, सुलक्ष-नीर-तीर-धीरपक्षि - लक्षकूजितम्।
वसिष्ठ - शिष्ट - पिप्पलादि - कर्दमादि - शर्मदे , त्वदीयपादपङ्कजं नमामि देवि नर्मदे।।५।।
सनत्कुमार - नाचिकेत - कश्यपादिषट्पदैर्धृतं, स्वकीय - मानसेषु नारदादिषट्पदैः।
रवीन्दु - रन्तिदेव - देवराजकर्मशर्मदे, त्वदीयपादपङ्कजं नमामि देवि नर्मदे।।६।।
अलक्ष-लक्ष-लक्षपाप-लक्षसार- सायुधं, ततस्तु-जीवजन्तुतन्तु-भुक्ति-मुक्तिदायम्।
विरञ्चि-विष्णु-शङ्कर-स्वकीयधाम-वर्मदे, त्वदीयपादपङ्कजं नमामि देवि नर्मदे।।७।।
अहोऽमृतं स्वनं श्रुतं महेश - केशजातटे, किरातसूत-वाडवेषु पण्डिते शठे नटे।
दुरन्तपापतापहारि - सर्वजन्तुशर्मदे, त्वदीयपादपङ्कजं नमामि देवि नर्मदे।।८।।
इदं तु नर्मदाष्टकं त्रिकालमेव ये सदा, पठन्ति ते निरन्तरं न यान्ति दुर्गतिं कदा।
सुलभ्य देहदुर्लभं महेशधामगौरवं, पुनर्भवा नरा न वै विलोकयन्ति रौरवम्।।९।।

इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं नर्मदाष्टकं सम्पूर्णम्।।

नर्मदाष्टकम् (२)

श्रीनर्मदे सकल-दुःखहरे पवित्रे ईशान-नन्दिनि कृपाकरि देवि धन्ये।
रेवे गिरीन्द्र-तनयातनये वदान्ये धर्मानुराग-रसिके सततं नमस्ते।।१।।
विन्ध्याद्रिमेकलसुते विदितप्रभावे शान्ते प्रशान्तजन-सेवितपादपद्मे।
भक्तार्तिहारिणि मनोहर-दिव्यधारे सोमोद्भवे मयि निधेहि कृपाकटाक्षम्।।२।।
आमेकलादपर-सिन्धु-तरङ्गमाला यावद्बृहद्-विमल-वारि-विशालधारा।
सर्वत्र धार्मिकजनाऽऽप्लुत-तीर्थदेशा श्रीनर्मदा दिशतु मे निजभक्तिमीशा।।३।।
सर्वाः शिला यदनुषङ्गमवाप्य लोला-विश्वेशरूपमधिगम्य चमत्कृताङ्गाः।
पूज्या भवन्ति जगतां स-सुराऽसुराणां तस्यै नमोऽस्तु सततंगिरिशाङ्गजायै।।४।।
यस्यास्तटीमुभयतः कृतसन्निवेशा देशाः समीर-जलबिन्दु-कृताभिषेकाः।
सोत्कण्ठ-देवगण-वर्णित-पुण्यमालाः श्रीभारतस्य गुणगौरवमुद्गृणन्ति।।५।।
स्वास्थ्याय सर्वविधये धन-धान्य-सिध्यै वृद्धिप्रभावनिधये जनजागरायै।
दिव्यावबोध-विभवाय महेश्वरायै भूयो नमोऽस्तु वरमञ्जुल-मङ्गलायै।।६।।
कल्याण-मङ्गल-समुज्ज्वल-मञ्जुलायै पीयूषसार-सरसीरुह-राजहंस्यै।
मन्दाकिनी-कनक-नीरज-पूजितायै स्तोत्रार्चनान्यमर-कण्टक-कन्यकायै।।७।।

श्यामां मुग्धसुधा-मयूखवदनां रत्नोज्ज्वलालङ्कृतिं
रामांफुल्ल- सहस्रपत्रनयनां हासोल्लसन्तीं शिवाम्।
वामां बाहुविशाल-वल्लिवलया-लोलाङ्गुलीपल्लवां
लालित्योल्लसितालकावलिकलां श्रीनर्मदां भावये।।८।।

श्री नर्मदांघ्रि-सरसीरुह-राजहंसी स्तोत्राष्टकावलिरियं कलगीतवंशी।
संवाद्यतेऽनुदिनमेकसमां भजद्भि-र्यैस्ते भवन्ति जगदम्बिकयाऽनुकम्याः।।९।।

काशीपीठाधिनाथेन शङ्कराचार्यभिक्षुणा।
कृता महेश्वरानन्द-स्वामिनाऽऽस्तां सतां मुदे।।१०।।

इति काशीपीठाधीश्वर-जगद्गुरु-शङ्कराचार्य-स्वामि-श्रीमहेश्वरानन्द-सरस्वती-विरचितं नर्मदाष्टकं सम्पूर्णम्।।